International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की आर्थिक नीतियों एवं सांस्कृतिक मूल्यों का समकालीन भारत पर प्रभाव

जितेन्द्र सिंह
शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, गोकुल दास हिंदू गर्ल्स डिग्री कॉलेज, मुरादाबाद (उ०प्र०)
महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली,(उ0प्र0)

प्रो० (डॉ०) मीनाक्षी शर्मा
विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, गोकुल दास हिंदू गर्ल्स डिग्री कॉलेज, मुरादाबाद (उ०प्र०)

महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली,(उ0प्र0)

शोध सारांश

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय चिंतन परंपरा के एक अद्वितीय विचारक थे, जिनकी आर्थिक नीतियाँ और सांस्कृतिक मूल्य आज भी समकालीन भारत के नीति–निर्माण और सामाजिक संरचना को गहराई से प्रभावित कर रहे हैं। उनका 'एकात्म मानवदर्शन' का सिद्धांत व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के बीच संतुलन स्थापित करने पर बल देता है। उपाध्याय ने आर्थिक विकास को केवल भौतिक उन्नति नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक विकास के साथ जोड़कर देखा। उनके अनुसार भारत का आर्थिक मॉडल भारतीय समाज की सांस्कृतिक विरासत, ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था, और स्वदेशी भावना पर आधारित होना चाहिए।

वर्तमान में भारत की आर्थिक नीतियों जैसे 'मेक इन इंडिया', 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' तथा 'सांस्कृतिक पुनरुत्थान' की विभिन्न पहलियों में उनके विचारों की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। इस शोध पत्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक एवं सांस्कृतिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है तथा यह विश्लेषण किया गया है कि उनके सिद्धांत किस प्रकार आज के भारत में नीतियों और सामाजिक व्यवहार को आकार दे रहे हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय चिंतनधारा में उपाध्याय के योगदान की पुनर्पुष्टि करना तथा समकालीन परिप्रेक्ष्य में उनके विचारों की प्रासंगिकता को उजागर करना है।

बीज शब्दः पंडित दीनदयाल उपाध्याय, आर्थिक नीतियाँ, सांस्कृतिक मूल्य, एकात्म मानववाद, समकालीन भारत, स्वदेशी मॉडल, आत्मनिर्भर भारत, भारतीय चिंतन, सांस्कृतिक पुनरुत्थान।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

प्रस्तावना

भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिदृश्य सदैव विविधता और गहराई से परिपूर्ण रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश के समक्ष एक ऐसी विकास नीति की आवश्यकता थी जो न केवल आर्थिक उन्नति सुनिश्चित करें, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक और नैतिक जड़ों को भी सुदृढ़ बनाए। इस संदर्भ में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का 'एकात्म मानवदर्शन' का सिद्धांत एक महत्वपूर्ण विचारधारा के रूप में उभरा।

'एकात्म मानवदर्शन' का मूल उद्देश्य व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के बीच संतुलन स्थापित करना है, जिसमें आर्थिक विकास को केवल भौतिक उन्नति नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक विकास के साथ जोड़ा गया है। उपाध्याय का मानना था कि भारत का आर्थिक मॉडल भारतीय समाज की सांस्कृतिक विरासत, ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था, और स्वदेशी भावना पर आधारित होना चाहिए।

वर्तमान में भारत की आर्थिक नीतियों जैसे 'मेक इन इंडिया', 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' तथा सांस्कृतिक पुनरुत्थान की विभिन्न पहलियों में उनके विचारों की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। यह शोधपत्र पंडित दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक एवं सांस्कृतिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिससे यह समझा जा सके कि उनके सिद्धांत किस प्रकार आज के भारत में नीतियों और सामाजिक व्यवहार को आकार दे रहे हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का संक्षिप्त परिचय

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर 1916 को उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के नगला चंद्रभान गाँव में हुआ था। उनके पिता भगवती प्रसाद उपाध्याय एक ज्योतिषी थे और माता रामप्यारी उपाध्याय एक धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। बाल्यावस्था में ही माता–पिता के निधन के कारण उनका पालन–पोषण उनके मामा ने किया।

शिक्षा के क्षेत्र में उपाध्याय ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल कीं। उन्होंने सानातन धर्म कॉलेज, कानपुर से स्नातक की डिग्री प्राप्त की और बाद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गए। उन्होंने 'राष्ट्र धर्म' नामक मासिक पत्रिका की स्थापना की, जो भारतीय संस्कृति और राष्ट्रवाद के प्रचार–प्रसार का माध्यम बनी।[i]

राजनीतिक क्षेत्र में, उपाध्याय भारतीय जनसंघ के प्रमुख नेता बने और उन्होंने 'एकात्म मानवदर्शन' का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जो भारतीय समाज के समग्र विकास की अवधारणा पर आधारित था। उनका यह सिद्धांत आज भी भारतीय राजनीति और नीति–निर्माण में मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर रहा है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का आर्थिक दर्शन भारतीय समाज की सांस्कृतिक और नैतिक जड़ों पर आधारित है, जिसमें 'स्वदेशी अर्थव्यवस्था' की अवधारणा केंद्रीय भूमिका निभाती है। यह अवधारणा न

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में एक मार्गदर्शक है, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान और नैतिक मूल्यों के संरक्षण का भी माध्यम है।

स्वदेशी अर्थव्यवस्था की परिभाषा और पृष्ठभूमि

'स्वदेशी' शब्द का अर्थ है 'स्वदेश में उत्पन्न' या 'देशी उत्पादों और सेवाओं का उपयोग'। पंडित उपाध्याय के अनुसार, स्वदेशी अर्थव्यवस्था का तात्पर्य है ऐसी आर्थिक प्रणाली, जो स्थानीय संसाधनों, कारीगरों, और परंपरागत उद्योगों पर आधारित हो, जिससे न केवल आर्थिक विकास हो, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक समरसता भी बनी रहे।

उपाध्याय ने पश्चिमी पूंजीवादी और समाजवादी आर्थिक मॉडलों की आलोचना करते हुए कहा कि ये दोनों ही भारतीय समाज की आवश्यकताओं और मूल्यों के अनुरूप नहीं हैं। उन्होंने कहा कि **"हमारी अर्थव्यवस्था का आधार हमारी संस्कृति, परंपराएं, और सामाजिक संरचना होनी चाहिए, न कि विदेशी विचारधाराएं।"**[ii]

स्वदेशी अर्थव्यवस्था के प्रमुख तत्व

1. **स्थानीय उत्पादन और उपभोग–** स्वदेशी अर्थव्यवस्था का पहला सिद्धांत है स्थानीय उत्पादन और उपभोग को प्रोत्साहित करना। उपाध्याय का मानना था कि यदि लोग स्थानीय उत्पादों का उपयोग करेंगे, तो इससे न केवल स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे।
2. **ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था–** उन्होंने ग्राम स्वराज की अवधारणा को समर्थन दिया, जिसमें प्रत्येक गांव आत्मनिर्भर हो और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर सके। इससे शहरीकरण की समस्या कम होगी और ग्रामीण क्षेत्रों का विकास संभव होगा।
3. **कुटीर और लघु उद्योगों का प्रोत्साहन–** उपाध्याय ने कुटीर और लघु उद्योगों को आर्थिक विकास का आधार माना। उन्होंने कहा कि इन उद्योगों के माध्यम से न केवल रोजगार सृजन होगा, बल्कि परंपरागत कौशल और हस्तशिल्प का संरक्षण भी संभव होगा।
4. **स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता–** स्वदेशी अर्थव्यवस्था का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण तत्व है स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता। उपाध्याय का मानना था कि जब तक देश आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं होगा, तब तक वह सच्चे अर्थों में स्वतंत्र नहीं हो सकता।[iii]

समकालीन भारत में स्वदेशी अर्थव्यवस्था की प्रासंगिकता

आज के वैश्वीकरण के युग में भी पंडित दीनदयाल उपाध्याय की स्वदेशी अर्थव्यवस्था की अवधारणा अत्यंत प्रासंगिक है। भारत सरकार की 'मेक इन इंडिया', 'आत्मनिर्भर भारत' और 'वोकल फॉर

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

लोकल' जैसी पहलें इसी दिशा में कदम हैं। इन पहलों का उद्देश्य है स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा देना, विदेशी निर्भरता को कम करना, और देश को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना।

इसके अलावा, कोविड–19 महामारी के दौरान जब वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएं बाधित हुईं, तब स्वदेशी उत्पादन और आत्मनिर्भरता की आवश्यकता और भी स्पष्ट हो गई। इस स्थिति ने यह सिद्ध कर दिया कि एक मजबूत और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था ही संकट के समय में देश को स्थिरता प्रदान कर सकती है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की स्वदेशी अर्थव्यवस्था की अवधारणा न केवल आर्थिक विकास का मार्गदर्शक है, बल्कि यह सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक संरक्षण, और नैतिक मूल्यों के संवर्धन का भी माध्यम है। उनका यह दृष्टिकोण आज के भारत में भी अत्यंत प्रासंगिक है, जहाँ आत्मनिर्भरता और स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देने की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित ग्राम आधारित विकास मॉडल भारतीय समाज के समग्र विकास की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। यह मॉडल न केवल आर्थिक प्रगति, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के संरक्षण पर भी बल देता है। इस मॉडल का उद्देश्य है; ग्रामों को आत्मनिर्भर, स्वावलंबी और समरस समाज के रूप में विकसित करना, जहाँ स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर सतत विकास सुनिश्चित किया जा सके।[iv]

ग्राम आधारित विकास मॉडल की अवधारणा

पंडित उपाध्याय का मानना था कि भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है। उन्होंने 'एकात्म मानवदर्शन' के सिद्धांत के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि विकास की प्रक्रिया में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के बीच संतुलन आवश्यक है। उनका ग्राम आधारित विकास मॉडल इस सिद्धांत पर आधारित है, जिसमें ग्राम को विकास की मूल इकाई माना गया है।

इस मॉडल में ग्रामों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्थानीय संसाधनों का उपयोग, कुटीर उद्योगों का प्रोत्साहन, कृषि आधारित अर्थव्यवस्था का विकास, और शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता जैसी बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता पर विशेष ध्यान दिया गया है। उपाध्याय का मानना था कि जब तक गाँवों का समग्र विकास नहीं होगा, तब तक राष्ट्र का समग्र विकास संभव नहीं है।

ग्राम आधारित विकास के प्रमुख तत्व

1. **आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन–** ग्राम आधारित विकास मॉडल का मूल उद्देश्य है ग्रामों को आत्मनिर्भर बनाना। इसके लिए स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर कुटीर उद्योगों, हस्तशिल्प, और कृषि आधारित उद्यमों को प्रोत्साहित किया जाता है। इससे न केवल रोजगार के अवसर बढ़ते हैं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी सशक्त होती है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

2. **शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता–** ग्रामों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना इस मॉडल का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसके माध्यम से ग्रामीणों की जीवन गुणवत्ता में सुधार होता है और वे विकास की मुख्यधारा से जुड़ते हैं।
3. **सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक संरक्षण–** ग्राम आधारित विकास मॉडल सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण पर बल देता है। ग्रामों में विभिन्न जाति, धर्म और वर्ग के लोगों के बीच समरसता स्थापित कर एक समृद्ध और सशक्त समाज का निर्माण किया जा सकता है।
4. **स्थानीय शासन और भागीदारी–** ग्राम पंचायतों को सशक्त बनाकर स्थानीय शासन की अवधारणा को साकार किया जाता है। ग्राम सभाओं के माध्यम से ग्रामीणों की भागीदारी सुनिश्चित की जाती है, जिससे विकास योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन संभव होता है।[v]

समकालीन भारत में ग्राम आधारित विकास मॉडल की प्रासंगिकता

वर्तमान में भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाएँ जैसे 'सांसद आदर्श ग्राम योजना', 'प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना', 'स्वच्छ भारत मिशन' और 'आयुष्मान भारत' आदि पंडित उपाध्याय के ग्राम आधारित विकास मॉडल की अवधारणाओं पर आधारित हैं। इन योजनाओं के माध्यम से ग्रामों में बुनियादी सुविधाओं का विकास, स्वच्छता, स्वास्थ्य, और शिक्षा के क्षेत्र में सुधार हो रहा है।

इसके अतिरिक्त, 'ग्राम पंचायत विकास योजना' के माध्यम से ग्राम पंचायतों को सशक्त बनाकर स्थानीय स्तर पर विकास योजनाओं का निर्माण और क्रियान्वयन किया जा रहा है। इससे ग्रामों में पारदर्शिता, जवाबदेही और सहभागिता बढ़ी है, जो पंडित उपाध्याय के विचारों के अनुरूप है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सांस्कृतिक दृष्टिकोण भारतीय राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में उभरता है। उनका मानना था कि भारत की आत्मा उसकी संस्कृति में निहित है, और जब तक इस सांस्कृतिक चेतना को जागृत नहीं किया जाएगा, तब तक राष्ट्र की सच्ची उन्नति संभव नहीं है। उनके विचारों में भारतीय संस्कृति की रक्षा, नैतिक मूल्यों और धर्म का स्थान, शिक्षा, भाषा, परंपराओं का महत्त्व, और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद जैसे विषयों पर गहन चिंतन मिलता है।[vi]

भारतीय संस्कृति की रक्षा हेतु विचार

पंडित उपाध्याय ने भारतीय संस्कृति को एक जीवंत और समावेशी परंपरा के रूप में देखा, जो सहिष्णुता, विविधता, और एकात्मता पर आधारित है। उनका मानना था कि पश्चिमी प्रभावों के कारण भारतीय समाज अपनी सांस्कृतिक जड़ों से दूर होता जा रहा है, जिससे सामाजिक विघटन और आत्मविस्मृति की स्थिति उत्पन्न हो रही है। उन्होंने कहा, **"जब तक हम अपनी संस्कृति की रक्षा नहीं करेंगे, तब तक हम अपने अस्तित्व को सुरक्षित नहीं रख पाएंगे।"**[vii]

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

उनके अनुसार, संस्कृति केवल नृत्य, संगीत, या कला तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक पद्धति है, जो हमारे विचारों, आचरण, और सामाजिक व्यवहार में प्रकट होती है। इसलिए, भारतीय संस्कृति की रक्षा का अर्थ है; अपने मूल्यों, परंपराओं, और जीवन दृष्टिकोण को संरक्षित रखना।

नैतिक मूल्यों और धर्म का स्थान

पंडित उपाध्याय ने धर्म को नैतिक मूल्यों का आधार माना। उनका मानना था कि धर्म केवल पूजा–पद्धति नहीं है, बल्कि यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नैतिक आचरण का मार्गदर्शन करता है। उन्होंने कहा, **"धर्म वह शक्ति है, जो समाज को एक सूत्र में बांधती है और व्यक्ति को उसके कर्त्तव्यों का बोध कराती है।"**[viii]

उनके अनुसार, नैतिक मूल्यों की अनुपस्थिति समाज में अराजकता और विघटन को जन्म देती है। इसलिए, उन्होंने शिक्षा, राजनीति, और अर्थव्यवस्था जैसे क्षेत्रों में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना पर बल दिया। उनका यह दृष्टिकोण आज के समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है, जब समाज में नैतिक पतन और मूल्यों की गिरावट देखी जा रही है।

शिक्षा, भाषा और परंपराओं पर विचार

पंडित उपाध्याय ने शिक्षा को संस्कारों का माध्यम माना। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि व्यक्ति के चरित्र निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास होना चाहिए। उन्होंने कहा, **"शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो व्यक्ति को अपने कर्त्तव्यों का बोध कराए और उसे समाज के प्रति उत्तरदायी बनाए।"**[ix]

भाषा के संदर्भ में, उन्होंने मातृभाषा में शिक्षा देने की वकालत की। उनका मानना था कि मातृभाषा में शिक्षा से न केवल ज्ञान का सहज संप्रेषण होता है, बल्कि यह सांस्कृतिक पहचान को भी सुदृढ़ करती है। उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने का समर्थन किया और कहा कि **"भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि यह संस्कृति का संवाहक भी है।"**[x]

परंपराओं के संदर्भ में, पंडित उपाध्याय ने उन्हें सामाजिक अनुशासन और नैतिक मूल्यों के संवाहक के रूप में देखा। उनका मानना था कि परंपराएं समाज को एकसूत्र में बांधती हैं और व्यक्ति को उसके कर्त्तव्यों का बोध कराती हैं। उन्होंने कहा, **"परंपराएं समाज की आत्मा होती हैं; इन्हें त्यागना आत्मविस्मृति के समान है।"**[xi]

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विचार भारतीय राष्ट्रवाद की एक विशिष्ट अवधारणा प्रस्तुत करता है। उनका मानना था कि राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमा नहीं, बल्कि यह एक सांस्कृतिक इकाई है, जो साझा इतिहास, परंपराओं, मूल्यों, और जीवन दृष्टिकोण पर आधारित है। उन्होंने कहा, **"भारत एक सांस्कृतिक राष्ट्र है, जिसकी आत्मा उसकी संस्कृति में निहित है।"**[xii]

उनके अनुसार, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का उद्देश्य है; सभी नागरिकों में एक साझा सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय चेतना का विकास करना। यह विचारधारा विविधता में एकता की भावना को प्रोत्साहित करती है और समाज में समरसता और सहयोग की भावना का संचार करती है। पंडित उपाध्याय का यह दृष्टिकोण आज के समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है, जब सामाजिक विघटन और सांस्कृतिक अस्मिता की चुनौतियाँ सामने हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का 'एकात्म मानवदर्शन' दर्शन समकालीन भारत की नीतियों और योजनाओं में गहराई से समाहित है। उनके विचारों ने आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, शासन प्रणाली, सामाजिक योजनाओं, शिक्षा, कृषि, एमएसएमई, और ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है।

आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया में प्रभाव

पंडित उपाध्याय ने आत्मनिर्भरता को राष्ट्र की स्वतंत्रता का मूल आधार माना। उनका मानना था कि भारत को अपनी आर्थिक नीतियों में स्वदेशी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, जिससे देश की आत्मा और संस्कृति सुरक्षित रह सके। वर्तमान में 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इंडिया' जैसी योजनाएं इसी विचारधारा को मूर्त रूप देती हैं। ये योजनाएं स्थानीय उत्पादन, कुटीर उद्योगों, और स्वदेशी तकनीकों को प्रोत्साहित करती हैं, जिससे देश की आर्थिक संरचना मजबूत होती है।[xiii]

सांस्कृतिक पुनर्जागरण की नीतियों में विचारों की झलक

पंडित उपाध्याय ने भारतीय संस्कृति को राष्ट्र की आत्मा बताया। उनका मानना था कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण के बिना राष्ट्र का समग्र विकास संभव नहीं है। वर्तमान में शिक्षा, भाषा, और परंपराओं को पुनर्स्थापित करने के प्रयास उनके विचारों की झलक हैं। उदाहरणस्वरूप, नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं और सांस्कृतिक मूल्यों को प्राथमिकता दी गई है, जो उपाध्याय के दृष्टिकोण के अनुरूप है।[xiv]

शासन प्रणाली और सामाजिक योजनाओं में उपस्थिति

पंडित उपाध्याय का 'अंत्योदय' का सिद्धांत, जिसमें समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान की बात की गई है, वर्तमान सरकार की विभिन्न योजनाओं में परिलक्षित होता है। 'प्रधानमंत्री जन धन योजना', 'आयुष्मान भारत' और 'उज्ज्वला योजना' जैसी पहलें समाज के वंचित वर्गों को सशक्त बनाने की दिशा

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

में कार्य कर रही हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास की किरण पहुंचाना है, जो उपाध्याय के विचारों के अनुरूप है।

शिक्षा, कृषि, एमएसएमई, और ग्रामीण विकास पर प्रभाव

पंडित उपाध्याय ने शिक्षा को संस्कारों का माध्यम माना और मातृभाषा में शिक्षा देने की वकालत की। नई शिक्षा नीति में मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा पर बल दिया गया है, जो उनके विचारों के अनुरूप है। कृषि के क्षेत्र में, उन्होंने प्राकृतिक खेती और कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करने की बात की, जिससे किसानों की आय में वृद्धि हो सके। वर्तमान में 'प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना' और 'ई–नाम' जैसे कार्यक्रम किसानों को सशक्त बना रहे हैं। एम.एस.एम.ई. क्षेत्र में, 'मुद्रा योजना' और 'स्टार्टअप इंडिया' जैसी पहलें छोटे उद्यमियों को प्रोत्साहित कर रही हैं, जो उपाध्याय के स्वदेशी और आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों के अनुरूप हैं।[xv]

विचारों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन

पंडित उपाध्याय के विचार वर्तमान वैश्वीकरण, सांस्कृतिक विघटन, और आर्थिक असमानताओं के दौर में और अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। जहां एक ओर विश्व आर्थिक प्रणाली में अनिश्चितता है, वहीं उनके द्वारा प्रस्तावित आत्मनिर्भरता आधारित आर्थिक नीति एक वैकल्पिक और संतुलित विकास मॉडल प्रस्तुत करती है।

आज के भारत में जब सांस्कृतिक पहचान, स्वदेशी तकनीक, नैतिक मूल्यों और सामाजिक समरसता की चर्चा फिर से केंद्र में है, तब पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार मार्गदर्शक के रूप में सामने आते हैं।

निष्कर्ष

एकात्म मानवदर्शन का दृष्टिकोण सर्वसमावेशी है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित 'एकात्म मानवदर्शन' केवल एक वैचारिक सिद्धांत नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक नीतियों के लिए एक व्यवहारिक मार्गदर्शन है। यह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को एक जैविक इकाई के रूप में देखता है। उपाध्याय का आर्थिक दर्शन पश्चिमी पूंजीवाद या समाजवाद से हटकर भारत की अपनी सांस्कृतिक और ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था पर आधारित है, जहाँ कुटीर उद्योग, आत्मनिर्भरता, और ग्राम विकास को केंद्र में रखा गया है। उनके विचारों में भारतीय संस्कृति, नैतिकता, धर्म, भाषा और परंपराएँ राष्ट्र की आत्मा मानी गई हैं। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विचार ने यह स्थापित किया कि राष्ट्र केवल भूगोल नहीं बल्कि सांस्कृतिक चेतना का परिणाम है। आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया, जनधन योजना, स्टार्टअप इंडिया, और नई शिक्षा नीति जैसी पहलें पंडित उपाध्याय के विचारों की झलक प्रस्तुत करती हैं।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

संदर्भ

[i]- उपाध्याय, दीनदयाल (1965), एकात्म मानवदर्शन, भारतीय विचार संस्थान, नई दिल्ली, पृ०सं० 5–7

[ii]- सिंह, अजय (2015), स्वदेशी अर्थव्यवस्था और भारत का विकास. प्रकाशकरू नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, पृ०सं० 29–30

[iii]- वही, पृ०सं० 32–33

[iv]- वही, पृ०सं० 35–36

[v]- वही, पृ०सं० 38–39

[vi]- शर्मा, रमेश (2010), पंडित दीनदयाल उपाध्याय : जीवन और दर्शन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ०सं० 45–46

[vii]- उपाध्याय, दीनदयाल (1965), एकात्म मानवदर्शन, भारतीय विचार संस्थान, नई दिल्ली, पृ०सं० 45

[viii]- वही, पृ०सं० 62

[ix]- वही, पृ०सं० 78

[x]- वही, पृ०सं० 85

[xi]- वही, पृ०सं० 92

[xii]- वही, पृ०सं० 100

[xiii]- शर्मा, रमेश (2010), पंडित दीनदयाल उपाध्याय : जीवन और दर्शन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ०सं० 88–89

[xiv]- मिश्रा, सुरेश (2008), आधुनिक भारत में स्वदेशी आंदोलन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ०सं० 92–93

[xv]- वही, पृ०सं० 95–96